International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 06, June 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 8.314 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अबूझमाड़िया जनजाति (छ.ग.) : समाज एवं अर्थव्यवस्था

डॉ. पी.एल. चन्द्राकर
डी.लिट.
विभागाध्यक्ष भूगोल विभाग
सी.एम.दुबे स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बिलासपुर (छ.ग.)

सामान्य परिचय :

माड़िया बस्तर सम्भाग की प्रमुख जनजाति हैं यह गोंड जनजाति की उपशाखा मानी जाती है। बस्तर में माड़ियाओं की पहचान तीन तरह से की जाती है। प्रथम आबूझमाड़िया द्वितीय दण्डामी या गौरसिंग (बायसन हार्न) माड़िया और तृतीय दोर्ला माड़िया। मुरिया–माड़िया अपने आपको गांड न कहते हुए कोई तूंगेर या कोंथा कहना गौरव महसूस करते है जो माड़िया बस्तर के घने जंगलों और उँचे पहाड़ियों पर निवास करते है वे अबूझमाड़िया, कहलाये जो माड़िया मैदानी भग में निवास करते है वे दण्डामी या गौरसिंग माड़िया कहलाये।

दण्ड का अर्थ मैदानी जंगल होता है। वैसे सम्पूर्ण बस्तर क्षेत्र को दण्डकारण्य कहा जाता है। दण्डानी माड़िया को गौरसिंग माड़िया डॉ. गिप्सन ने कहा था तथा दोर्ला माड़िया बस्तर सम्भाग के दक्षिणी भाग में निवास करते है। आबूझमाड़ शब्द का सर्वप्रथम कैप्टन सी.एल.आर. ग्लसफर्ड ने 1866–67 में अपनी रिपोर्ट किया था।

अबुझमाड़िया छत्तीसगढ़ राज्य की एक विशेष पिछड़ी जनजाति है। राज्य में इस जनजाति के लोग मुख्यतः नारायणपुर जिले में निवास करती है।

सामाजिक आर्थिक दृष्टि से यह जनजाति समूह अन्य जनजातियों की अपेक्षा अधिक पिछड़ी है। इसीलिए इन लोगों के विशिष्ट विकास के लिए सन् 1978 से अबूझमाड़िया विकास प्राधिकरण, नारायणपुर का गठन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र :

अबुझमाड़िया जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर संभाग के अंतर्गत मुख्यतः नारायणपुर जिला में निवास करती है। यह जिला ग्लोब में 19′ 32′ उत्तरी अक्षांस से 19′54′ उत्तरी अक्षांस तथा 80′8′ पूर्वी देशांतर से 80′48′ पूर्वी देशान्तर के मध्य है। इस जिले का कुल क्षेत्रफल 6913 वर्ग कि.मी. तथा 2011 के जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 139820 है। यह जिला अबुझमाड़ पहाड़ियों के अंतर्गत विस्तृत है। यह एक अत्यंत दुर्गम क्षेत्र है जैसा कि नाम से हि स्पष्ट है। अबुझ मतलब जिसका बुझना असंभव है।

अध्ययन का उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है :–

1. अबुझमाड़िया प्रदेश की विशेष पिछड़ी जनजातियां हैं। इनका विकास सन 1978 से अबुझमाड़िया विकास प्राधिकरण के द्वारा किया जा रहा है। वर्तमान समय में इनकी सामाजिक, आर्थिक स्तर क्या है, इसका आंकलन करना।
2. इस जनजाति की परम्पराएं, नवाचार के मार्ग मे किस प्रकार बाधक है, इसका पता लगाना।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 06, June 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 8.314 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

3. 15 नवम्बर सन् 2023 से पी.एम.पी.वी.टी.डी. विकास मिशन की शुरूआत किया गया है। इसका लाभ इन्हें किस प्रकार मिल रहा है, इसका आंकलन करना।

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत शोध पत्र प्रथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। प्राथमिक आंकड़ा हेतु शोधकर्ता ने अबुझमाड़िया के निवास क्षेत्र में जाकर उनकी सामाजिक आर्थिक व्यवस्था का अवलोकन किया है।

आवास :

डॉ. वैरियर एलबिन ने अबूझमाड़ के बारे में लिखा है के नारायणपुर से दक्षिण पश्चिम की ओर रास्ता जाता हैं। बस्तर की यह पश्चिमी मार्ग एकदम निर्जन और उत्तेजक है। सोनपुर के हल्बा केन्द्र से यह विराट वन्य दृश्यावलियों से युक्त अबूझमाड़ की ओर जाता है। इसी रास्ते का एक भाग परलकोट और प्रतापपुर जाता है। यहां पर बस्तर की सुरन्य अबूझमाड़ पर्वत है जो श्रृंखला है जो अबूझमाड़िया या हिल माड़िया जनजातियों का एकान्त महान और अभेद्यगढ़ है।''

अबूझमाड़ियों का गांव प्रायः नदियों के किनारे अथवा पहाड़ी ढलानों पर बसते है। इनका घर झोपड़ी नुमा लकड़ी बांस घास और पत्तों से बने होते है। किसी किसी का घर का दीवार मिट्टी का बना होता है, जिन्हें गोबर से लिपाई करके कहीं–कहीं नोहडोरा के अलंकरण किये जाते है। इनकी बस्ती में एक घर दूसरे घर से अलग अलग होते है जो दूरी आवाज पहुंचने तक की होती है।

पूर्व में अबूझमाड़िया जनजाति के सदस्य पेंदा (स्थानान्तरित कृषि) एवं आदम खोजर वन्य प्राणियों के भय के कारण कुछ वर्षो के पश्चात् ग्राम को एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरित करते थे। वर्तमान में शिक्षा, पेयजल, स्वास्थ्य, बिजली, सड़क आदि सुविधाओं की वृद्धि के कारण अबूझमाड़ियों के ग्राम स्थायी हो रही है। अब वे प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ अर्जित कर पक्के मकानों में भी रहते है। अबूझमाड़ का गांव छोटे आकार व कम जनसंख्या वाले होते है।

प्रत्येक ग्राम में एक देवी का मंदिर होता है तथा ग्राम के मध्य में घोटुल (युवागृह/कुमार गृह) होता है जिसमें ग्राम के अविवाहित युवक युवतियां शाम को एकत्रित होकर मनोरंजन करते है। यह ग्राम सभा एवं अतिथि गृह भी है। कई ग्रामों में रजस्वला स्त्रियों के लिए एक पृथक झोपड़ी होती है इसे 'कुरमा लोन' कहते है। इसमें प्रसूता स्त्री को रखते है, जिसे बेंडे कुरमा भी कहते है। यहां पुरूषों का प्रवेश वर्जित रहता है।

अबूझमाड़ियों का आवास गृह अगली (बरामदा) अधा (पति का सोने का कक्ष) अंगारी (रसोई घर) लोनू (भण्डार कक्ष) में विभाजित होता है। ये लोग एक प्रकार का मकान अनाज संग्रहण हेतु बनाते है जिसे मंडा कहते है। इसे मचान की तरह बनाया जाता है तीसरे प्रकार का मकान गांव से थोड़ी दूर जंगल में फसल संग्रहण हेतु बनाया जाता है जिसे 'केतुल' कहते है। प्रत्येक घर के चारों ओर एक बाड़ी होती है, जिसमे तम्बाकू, सब्जी और केला उगाये जाते है।

व्यवसाय :

अबूझमाड़िया जनजाति की अर्थव्यवस्था निर्वाहक है। पूर्णतः प्रकृति पर आधारित है। कृषि, वनोपज संग्रहण शिकार एवं कुटीर उद्योग इस जनजाति का प्रमुख व्यवसाय है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 06, June 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 8.314 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

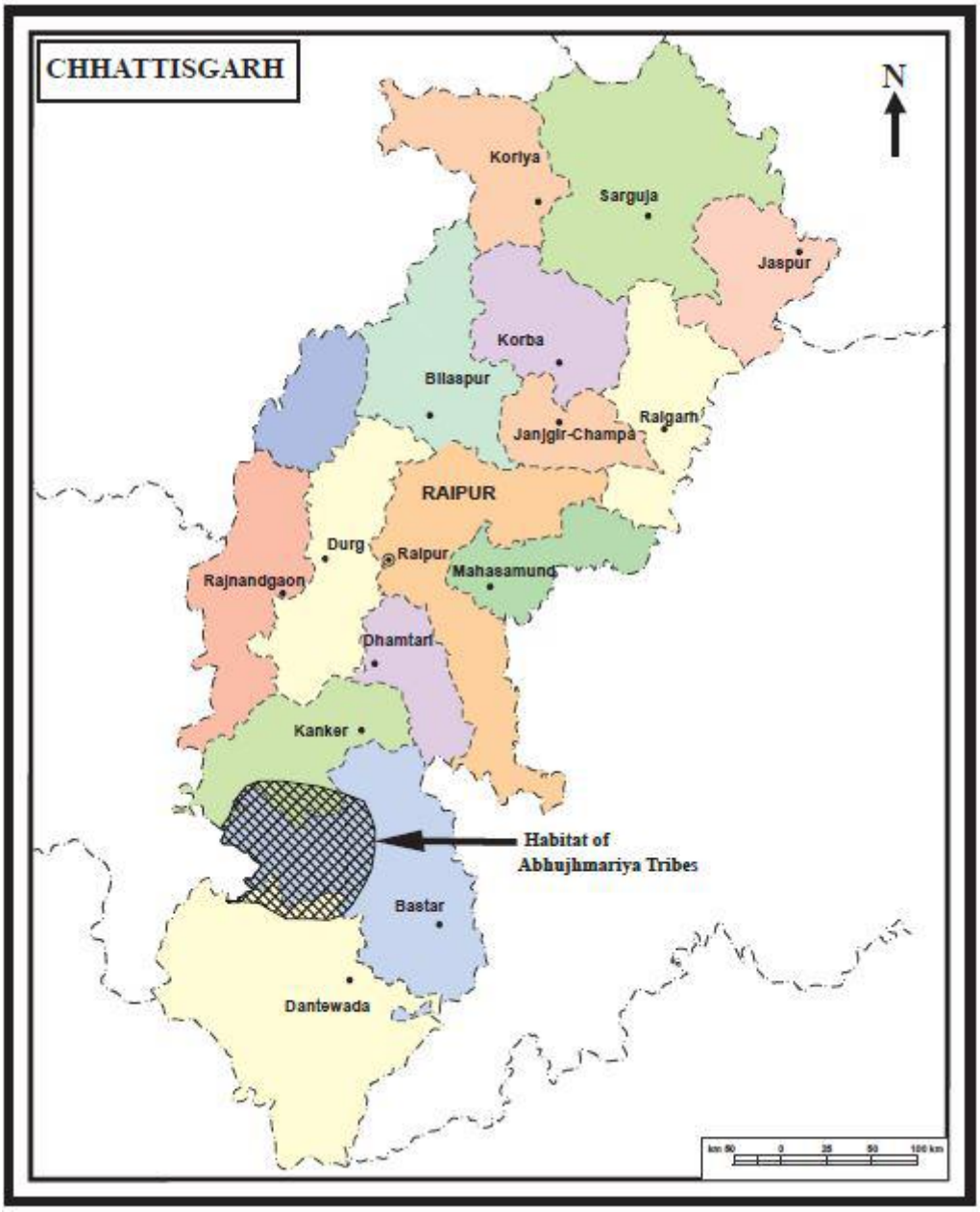

कृषि में पहले ये लोग स्थानान्तरित कृषि करते थे। वे इसके पेंदा अर्थात् पहाड़ काटना कहते थे। मुखिया के राय से भूमि चयन कर पेंदा तैयार किया जाता था जिसमें प्रत्येक परिवार का अलग अलग बाढ़ न होकर समस्त पेंदा भूमि का बड़ा बाड़ा होता था अब ये लोग धीरे धीरे स्थायी कृषि करने लगे है इसके अलावा वनोपज संग्रहण, शिकार मछली मारना एवं बांस एवं घास की चटाई, टोकरी, रस्सी बनाने का कार्य इनके द्वारा किया जाता है।

पेंदा के लिए भूमि का चुनाव करते समय गांव का मुखिया यह निर्णय देता था कि किस व्यक्ति को कितनी भूमि चाहिए और वह कहां होगी? जंगल सफाई का कार्य सामूहिक रूप से किया जाता था। खेतों के लिए अलग अलग बाड़ नहीं बनाई जाती थी वरन पूरे पेंदा को घेर लिया जाता था। वह चाहे जितना बड़ा जाता हो।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 06, June 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 8.314 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भोजन एवं पेय पदार्थ :

अबूझमाड़िया मांसाहारी एवं शाकाहारी दोनों होते है। ये भोजन के रूप में कोसरा, कोदो–कुटकी, चांवल, मक्का, मूंग, उड़द दाल एवं सब्जियों का प्रयोग करते है। ये शिकार द्वारा प्राप्त जानवर जैसे सूअर, कोटरी, खरगोश पक्षी आदि के अतिरिक्त मछली, मूर्गा एवं बकरा का मांस सेवन करते है। इनके दैनिक भोज्य पदार्थ में वन से प्राप्त अनेक प्रकार के कंदमूल, भाजी, लाल चींटी (चाखना) चूहा, घोंघा, केकड़ा, मेंढक का भी सेवन करते है। पेय पदार्थ के रूप में सल्फी, महुआ का शराब चांवल का लांदा इन्हें प्रिय है।

सामाजिक व्यवस्था :

अबूझमाड़िया परिवार पितृसत्तात्मक होते है। पटेल, गायता, ओझा गुनिया आदि इस जनजाति के सामाजिक संगठन के प्रमुख घटक होते है जाति पंचायत में पटेल गायता आदि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सामाजिक एवं धार्मिक कार्य भी इन लोगों के मार्गदर्शन में सम्पन्न होता है।

इनमें समगोत्रीय विवाह वर्जित है। विवाह प्रस्ताव वर पक्ष रखता है वधु के पिता की सहमति पर सूक (वधुमूल्य) निर्धारित किया जाता है। इनमें सहमति विवाह के अलावा बिधेर (घर से भागकर) ओड़ियत्ता (घुसपैठ) चूड़ी पहनावा (विधवा या परित्यक्ता पुर्नविवाह) प्रथा प्रचलित है। पुरूष एक से अधिक पत्नि रख सकता है। लमसेना विवाह में होने वाले दामाद को ससुर के घर दो तीन साल सेवा देना पड़ता है।

मृत्यु संस्कार इनमें शवदाह एवं दफनाना दोनो प्रचलित है। मृतक की मृत्यु स्वाभाविक होने पर शव को दफनाया जाता है। दुर्घटना, जादू टोना, या बीमारी से मृत्यु होने पर शव को जलाया जाता है। किसी अपराध के कारण मृत्युदण्ड पर फांसी की सजा होने पर मृतक का वस्त्र या अन्य वस्तु अर्जित कर पुतला को जलाया जाता है। दफनाते समय मृतक सिर पूर्व में तथा पैर पश्चिम में रखा जाता है। अन्तिम संस्कार के दौरान मृतक की सभी वस्तुओं को श्मशान में जला देते है या रख देते है इनमें मृतक की आत्मा की प्रसन्नता हेतु गाय एवं सूअर एवं मूर्गे की बलि दी जाती है तथा गाय के पुंछ को श्मशान में शव के समीप लटकाया जाता है। मृतक के याद में स्मृति स्तम्भ (उरूसकाल) गड़ाया जाता है। स्मृति स्तम्भ पत्थर का होता है तब ये अनुमान लगाते है कि यदि पत्थर पढ़ता है तो मृतक की आत्मा प्रसन्न है।

देवी देवता एवं पर्व उत्सव :

अबूझमाड़िया जनजाति का धार्मिक जीवन आदिम है। ग्राम के धार्मिक प्रमुख को पेरमा या पुजारी कहते है। पेरमा धार्मिक उत्सवों शिकार तथा बलि से सम्बंधित कार्यो को सम्पन्न कराता है। भूमि पुजारी को गायता कहते है। वड्डे गोत्र पुजारी को कहते है। लेस्के झाड़फूंक व दवाई देने वाले को कहते है।

ककसाड़, भीमल, वर्षा की पूजा का पर्व, महुआ पंडुम, बीज पंडुम, नवाखानी, दशहरा दिवाली विजा कोड तांग (हरियाली) आदि इनका प्रमुख पर्व है ककसाड़ जात्रा अबूझमाड़िया जनजाति का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है। इसमें कुल गोत्र की देवी–देवताओं की पूजा की जाती है। यह पर्व मई जून माह में मनाया जाता है।

अबूझमाड़िया जनजाति में त्योहार से पहले नयी फसल, फल सब्जी का सेवन निषेध है। वे त्योहारों के माध्यम से प्रकृति की अराधना तथा उसके प्रति कृतघ्नता ज्ञापित करते है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 06, June 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 8.314 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गौर सिंग नृत्य जो प्रायः विवाह के अवसर किया जाता है इनका प्रमुख नृत्य है। डॉ. वेरियर एलविन ने गौरसिंग माड़िया नृत्य की कल्पनाशील संरचना को देखकर उसे पृथ्वी सबसे सुन्दर नृत्य कहा था। इस नृत्य में पुरूष सिर में वनभैसा का सिंग पहने रहते है तथा गले में मांदर लटकाये रहते है। महिलाएं, लकड़ी का दण्डा लेकर एक दूसरे का कमर पकड़कर नाचती है।

इन जनजाति के अन्य नृत्य कड़साल, कोडतापाटा, आनापाटा आदि है। मड़ई पर्व महत्वपूर्ण अनुष्ठानिक पर्व है जो फरवरी माह में मनाते है। पेड़ पौधों की पूजाकर उनके आस पास नृत्य करने की परंपरा माड़ियों में अन्य आदिवासियों की तरह देखी जाती है। आंगा देव इनका सबसे बड़ा देव है। इनके प्रत्येक ग्राम में देव गुड़ी अवश्य होती है। इस प्रकार अबूझमाड़िया प्रकृति पूजक है। इसके अलावा दन्तेवाड़ा की दन्तेश्वरी देवी इनकी आराध्य देवी है। अन्य जनजातियों की तरह ये लोग जादू टोना, भूत प्रेत, झाड़फूंक पर विश्वास करते है।

इनमें कोटकी घोड़ा नृत्य भी प्रचलित है। इनके घोटूल के अन्र तालूरमुन्ते देव की पूजा की जाती है। कौमार्य संस्कार को कांडाबरा या पुष्पविवाह कहते है। काकसाड़, गेड़ी और रिलो प्रमुख नृत्य है। लिंगोपेन इनके आदि पुरूष। अबूझमाड़ क्षेत्र को मेटाभूम या मेटा कोइतोर भी कहते है।

वस्त्र, आभूषण, गोदना एवं बोली :

अबूझमाड़ियाओं की बोली अबूझमाड़ी है जिसे कोया भी कहा जा सकता है। पुरूष प्रायः उघड़े बदन लंगोटी व बंडी पहनकर रहते है और कहीं कहीं धोती, कुर्ता, बंडी कमीज पंछा धारण करते है। माड़िया स्त्रियां बदन पर एक साड़ी लपेटती है। इनकी स्त्रियां प्रायः ब्लाउज नहीं पहनती है। शिक्षा के प्रभाव से इनका वस्त्र आभूषण बदल रहा है।

बांस अथवा लकड़ी की कंघियां बनाना माड़ियाओं का प्रिय शौक हैं। कंघी युवा महिलाओं के लिये प्रेम का प्रतीक है। मूंगा माला शीशे का माला सस्ते धातू का आभूषण महिलाएं पहनती है। महिलाएं प्रायः गोदना गोदवाती है।

जनसंख्या :

सन् 1993 के सर्वेक्षण के अनुसार अबूझमाड़िया जनजाति की जनसंख्या 17016 थी। जिसमें पुरूषो की संख्या 8529 व स्त्रियों की संख्या 8487 थी। 1991 की जनगणना के अनुसार अबूझमाड़ियों की संख्या 13692 थी।

सारणी : 1

छत्तीसढ़ : अबूझमाड़िया जनजाति की जनसंख्या वृद्धि दर, 1961–2011

क्रं.	दशक	जनसंख्या	वृद्धिदर % मे
1	1931	11500	
2	1941	13000	13.04
3	1961	11115	14.50
4	1981	15500	39.45
5	1991	17016	9.78
6	2001	19401	14.01

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 06, June 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 8.314 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सर डब्ल्यू बी. ग्रियर्सन के कार्यकाल में अबूझमाड़ियों की सर्वप्रथम जनगणना 1931 में सम्पन्न हुई थी। उस समय अबूझमाड़ियों की कुल जनसंख्या 11500 थी। सन् 1941 में बेरियर एल्विन ने इनकी जनसंख्या लगभग 13000 बतायी थी। 1961 में इनकी जनसंख्या 11115 तथा 1971 में 13000 तथा 1981 में इनकी जनसंख्या 15500 थी। सन् 2002 के सर्वेक्षण के अनुसार इनकी कुल जनसंया 19401 पाई गई।

निष्कर्ष :

अबूझमाड़ क्षेत्र में शासन एवं प्रशासन के सतत् प्रयास से विकास की गंगा बहने लगी है। अबूझमाड़िया जनजाति अब शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, पेय एवं अन्य शासकीय योजनाओं का लाभ अर्जित कर विकास की मुख्य धारा से जुडते जा रहे हैं किन्तु मुख्य धारा से जुड़ाव की गति अभी भी धीमी है इसे तीव्र कर इस जनजाति में व्याप्त अन्धविश्वास गरीबी, पिछड़ापन आदि को दूर किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ

Grigsen, Wilfrid (1949) : The Maria Gonds of Bastar London `Oxford University Press.

Elwin Verrier (1947) : The Muria and their Ghotul London Oxford University Press

Kurup A. M. (1961) : Social Life of the Abujhmadias Bulletin of the Tribal Research Institute (Chhindwara) Vol. 1 No , Pg. 26-31.

Tiwari D.N. (1984) : Primitive Tribes of Madhya Pradesh Govt. India Press Faridabad.

Russel R. N. Hira Lal (1993) : The tribes and Custes of the Central Provinces of India.

तिवारी एस. के. शर्मा (1994) श्री कमल : मध्यप्रदेश की जनजातियाँ समाज एवं व्यवस्था म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल

तिवारी विजय कुमार (2001) : छत्तीसगढ़ की जनजातियाँ हिमालया पब्लिशिंग हाउस मुम्बई

त्रिपाठी कौशलेन्द्र चन्द्राकर (2012) पुरूषोत्तम : छत्तीसगढ़ एटलस एस शारदा पब्लिकेशन, बिलासपुर (छ.ग.)

Census of India (1961-2011) : District Census Hand Books and Chhattisgarh Series.

निरगुणे बसन्त (2004) : आदिवर्त छत्तीसगढ़ की प्रमुख जनजातियाँ महावीर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स इन्दौर (म.प्र.)

हसनैन नदीम (1997) : जनजातीय भारत जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली।